Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April – June 2026)

मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठगुलाब' में नारी अस्मिता और आत्मसंघर्ष

संदीप कौर
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर।

सारांश-

मेरे शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठगुलाब' में नारी संवेदना की अभिव्यक्ति को समझना है। मृदुला गर्ग एक शांत, संकोची तथा अंतर्मुखी स्वभाव की लेखिका हैं। उनका उपन्यास 'कठगुलाब' नारी भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने वाली एक सशक्त कृति है, जिसमें स्त्री पर होने वाले अन्याय, अत्याचार और उसकी पीड़ा के साथ-साथ स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता को अत्यंत संवेदनशील रूप में चित्रित किया गया है। 'कठगुलाब' का प्रतीकात्मक अर्थ 'नारी की जिजीविषा' है। लेखिका का मानना है कि स्त्रियाँ साधारण गुलाब की तरह नहीं होतीं, जो स्वतः ही खिल उठें, बल्कि वे कठगुलाब की भाँति होती हैं, जिन्हें खिलने के लिए विशेष देखभाल और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है।

मूल शब्द: कठगुलाब, मृदुला गर्ग, नारी की जिजीविषा।

मूल आलेख-

बीज चाहे कितना ही शक्तिशाली और संभावनाओं से परिपूर्ण क्यों न हो, उसका सही विकास तभी संभव है जब उसे समय पर अनुकूल वातावरण—हवा, पानी और मिट्टी—प्राप्त हो। यही विचार नारी के संदर्भ में भी सार्थक प्रतीत होता है। कठगुलाब नारी संवेदना को अभिव्यक्त करने वाली एक सशक्त कृति है, जिसमें स्त्री पर होने वाले अन्याय, अत्याचार और उसकी पीड़ा के साथ-साथ स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं को अत्यंत सूक्ष्मता से उकेरा गया है। रचनाकार के गहन चिंतन और जीवनानुभवों की परिपक्वता के कारण यह कृति पाठक की संवेदनाओं को गहराई से प्रभावित करती है। यह उपन्यास पारंपरिक स्त्री-विमर्श की सीमाओं से आगे बढ़कर स्त्री और पुरुष के संबंधों को समग्रता में समझने का अवसर देता है। साथ ही, इसमें स्त्री की शक्ति, संघर्षशीलता और विपरीत परिस्थितियों में निखरने की क्षमता को लेखिका ने अपनी नवीन दृष्टि से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

मृदुला गर्ग के लेखन का केंद्रीय विषय स्त्री की स्वतंत्र अस्मिता और उसकी मानवीय पहचान है। उनके अनुसार, स्त्री केवल एक शारीरिक अस्तित्व नहीं, बल्कि संवेदनाओं से परिपूर्ण एक पूर्ण व्यक्तित्व है। वे उस पारंपरिक धारणा का विरोध करती हैं, जो स्त्री को मात्र जैविक अस्तित्व तक सीमित कर देती है। उनका मानना है कि स्त्रियाँ भी उचित वातावरण और स्नेह मिलने पर पूर्ण रूप से विकसित होकर जीवन में खिल सकती हैं। यदि उन्हें विश्वास, प्रेम और आत्मीयता का सहारा मिले, तो उनकी अंतर्निहित कोमलता और शक्ति विकसित हो सकती है। स्त्रियाँ साधारण गुलाब की तरह नहीं हैं जो अपने आप खिल जाएँ, बल्कि वे 'कठगुलाब' के समान हैं, जिन्हें संवेदनशील देखभाल की आवश्यकता होती है। 'कठगुलाब' यहाँ नारी की जिजीविषा और संघर्षशीलता का प्रतीक है। जैसे कठफोड़वा विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी सृजनात्मक शक्ति को बनाए रखता है, वैसे ही स्त्री भी हर स्थिति में अपनी क्षमता और धैर्य को संजोए रखती है। लेखिका के अनुसार, स्त्री में सजगता, साहस, धैर्य, आस्था और दृढ़ता का होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि उसे न केवल स्वयं की रक्षा करनी होती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी संस्कारित और सुरक्षित रखना होता है। 'कठगुलाब' की सभी स्त्रियों मानो कहती हैं "मैं चिल्ला-चिल्लाकर कहती हूँ कि मैं एक बच्चा पालना चाहती

हूँ। अपनी आँखों के सामने अपने पाले को आत्म निर्भर बनते देखना चाहती हूँ। उसे आत्म निर्भर बनाने में इन्वेस्ट करना चाहती हूँ। मैं पालना, पोषना, सहेजना, संवारना चाहती हूँ। मैं एक सर्जक होना चाहती हूँ।"[1] सृजनेच्छा यानी आत्माभिव्यक्ति और आत्म विस्तार की तमाम अकुलाहट के बावजूद वे माँ नहीं बन पा रही हैं। हर बार गर्भपात ठीक कठगुलाब की तरह। खिलने की सारी संभावनाओं को अपने भीतर समोकर काठ-सी सख्त बेजान होने की यन्त्रणा। सैंकड़ों कलियां लदी हैं जिन पर लेकिन फूल बनकर खिलने का दम एक में भी नहीं। कठगुलाब की झाड़ियों पर लदी हैं सारी महक, रंग तथा सुन्दरता के खजाने को अपने भीतर छिपाए पानी के छींटे पाते ही एक-एक कर खिलती हैं। झनम-झुम। झनम-झुम। काठ में उकेरे सदाबहार फूलों की तरह।

लेखिका का मानना है कि हार्दिकता और आस्था के अभाव में प्रेम का वास्तविक स्वरूप उद्घाटित नहीं हो सकता। स्मिता का चरित्र इस विचार को अत्यंत प्रभावी ढंग से मूर्त रूप देता है। वह अपने जीवन में क्रूरता, कड़वाहट, मानसिक तनाव और घृणा के तीव्र अनुभवों से गुजरते हुए बाह्य रूप से 'कठगुलाब' की भाँति कठोर और निस्पंद प्रतीत होती है, किंतु उसके अंतर्मन में हार्दिकता और आस्था का स्रोत अभी भी अक्षुण्ण बना रहता है। उसकी आंतरिक संरचना कोमल, सुकुमार, सरस और जीवन्त है, जो स्त्री-स्वभाव की मूल संवेदनशीलता को रेखांकित करती है। स्मिता प्रकृति के समान आघातों को धैर्यपूर्वक सहन करती हुई साहस के साथ जीवन-पथ पर अग्रसर होती है। वह भली-भाँति समझती है कि जिस प्रकार बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए उसकी अनुर्वरता को दूर कर उसे तरलता से अभिसिंचित करना आवश्यक होता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी आत्मीय संवाद और स्नेह का होना अनिवार्य है। 'रत्नगर्भा' धरती का रूप यहाँ इस सत्य का प्रतीक है कि प्रेम और आत्मीयता के स्पर्श से जीवन में सृजन और समृद्धि का संचार होता है।

मृदुला गर्ग का नारी-जीवन के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत परिपक्व, संवेदनशील और संतुलित है। वे यह प्रतिपादित करती हैं कि स्त्री पुरुष के अमानवीय व्यवहार का केवल प्रतिरोध ही नहीं करती, बल्कि उस प्रतिरोध को सृजनात्मक ऊर्जा में रूपांतरित कर देती है। स्मिता, मारियान और मनीषा जैसे पात्र पीड़ा के मार्ग से गुजरते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर होते हैं। यहाँ यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि सृजन का मूलाधार पीड़ा है—दर्द को बाँटे बिना मुक्ति संभव नहीं और प्रेम के अभाव में दर्द का विभाजन भी संभव नहीं। स्मिता जब-जब भारत लौटती है, वह प्रकृति की गोद में बच्चों के माध्यम से एक नए जीवन-संसार की सृष्टि करती है। यह प्रक्रिया उसकी पीड़ा को प्रेम में रूपांतरित करने का सशक्त प्रतीक बनती है। इसी संदर्भ में मारियान का कथन— "कभी नहीं। मैं मर्द नहीं सर्जक बनना चाहती हूँ ताकि उन अक्षरों की दुनिया में मैं तुझे अपने खुद की कितनी-कितनी औरतों को दुबारा जन्म देना चाहती हूँ। पीड़ा की एक कचोट को प्यार में बदल दूंगी। फिर झुनुन-झुन खिलेंगे गुलाब। फिर मैं अपनी पीड़ा शब्दों में नहीं बच्चों में बांटूंगी।"[2] यह नारी की सृजनात्मक चेतना का उद्घोष है। वह अपनी पीड़ा को शब्दों में नहीं, बल्कि सृजन और मातृत्व के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहती है, जिससे जीवन में नवसृजन की संभावनाएँ विकसित होती हैं।

अंततः स्पष्ट होता है कि रचनात्मक सृजन और मातृत्व, दोनों ही स्त्री की सृजन-इच्छा के विभिन्न रूप हैं। संतान की आकांक्षा एक मूलभूत मानवीय आवश्यकता के रूप में उभरती है, जिसके अभाव में जीवन अधूरा प्रतीत होता है। अतः उसके जीवन में नीरजा का प्रवेश होता है, परन्तु सारे खुलेपन के बावजूद नीरजा मजूमदार में पितृत्व की तलाश करती है। वह नीरजा से कहती है- "मेरा स्पर्म फ्रीज करवा कर रखवा लो जब सुविधा हो तब इस्तेमाल कर लेना।"[3] यह वही नीरजा है जिसके सम्बन्ध में विपिन मजूमदार जो चालीस वर्षीय सौम्य सुलझा हुआ दृष्टि सम्पन्न चिन्तनशील पुरुष है, कहता है- "पर नीरजा मेरे लिए माध्यम या औरत नहीं एक मोहक व्यक्तित्व थी। अपनी अस्मिता, पैशन, आकर्षण, लावण्य सब खोकर उसका एक साफ सुथरी चिकनी निपुण मशीन बनते जाना नाकाबिले बर्दाशत था। महसूस होता

कि उसके अवयव कलपुर्जी से ज्यादा कुछ नहीं हैं और उसका दिमाग उनका रखरखाव करने वाला यन्त्र है। जिसकी जानकारी देने वाली भाषा भर उसे आती है और कुछ नहीं।"[4] उपन्यास के आखिरी हिस्से में नीरजा में भी बदलाव होता है। वह अपनी बूढ़ी असहाय माँ नमिता को घर लाती है। इसे सुनकर विपिन मजूमदार कहता है- "वाकई उसे खुशी हुई थी। यंत्र खुद अपना खंडन करे, इससे अधिक हर्ष की बात और क्या हो सकती है हर साख पर हजार-हजार कठगुलाब उग आएं।"[5]

इस संवेदना की अवस्था को लेखिका ने दर्जिन बीवी के माध्यम से अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। उसके भीतर प्रेम की आंतरिक शक्ति के साथ व्यापक मानवीय सरोकार गहराई से समाहित हैं, जो जीवन-राग की भांति उसकी प्रत्येक सांस में बसे हुए हैं। वह अधिक बोलने में विश्वास नहीं करती, बल्कि अपने कर्मों के जरिए ही अपने विचारों को साकार रूप देती है। यदि उसका पति उसे स्वीकार कर लेता है, तो वह धर्म, समाज या न्याय के पास जाकर सहानुभूति या दया की अपेक्षा करना उचित नहीं समझती। वह कहती है- "जिसने मेरे आत्मसम्मान को चोट पहुँचाई उससे पैसा क्या लूँ।"[6] वह सिलाई मशीन को अपना साथी बनाकर अपना मिशन प्राप्त करती है। वह ऐसी नारी है जो कहती है- "हम औरतें हैं और हमें माफ करना आता है।"[7] वह दूसरों के समर्थन और सहारे से जीवन जीन नहीं चाहती। वह जानती है कि क्षमा और मुक्ति आत्म-विस्तार के द्वार हैं।

कठगुलाब की स्त्रियों का आदर्श मानव मात्र से प्रेम है। वे प्रेम को प्राप्त करती हैं। अपने लेखन में दुनिया भर की पीड़ा को स्वर देती और प्रेम फैलाती मारियन आश्चर्यचकित है कि "क्या वाकई एक वक्त था, जब एक बच्चे के खातिर अपनी जिन्दगी के हजारों लाखों लमहे बेमानी बनाने पर आमादा थी।"[8] यही प्रेम का चरमोत्कर्ष, पराकाष्ठा और परम तत्त्व है। यह भारतीय समाज में ही संभव है। स्मिता के भीतर उसकी तबाही का इतिहास रचने वाले उसके जीजा के प्रति बदले की प्रतिहिंसा का भाव भर उठा है। वह संकल्प लेती है- "बहुत जल्द मैं ठीक ऐसे ही उस नर पिशाच को, उसके किए की सजा दूँगी। बचपन में माँ को दुर्गापाठ करते सुना था। शब्द-पद भूल चुके थे, पर लय-ताल मन में बैठी रह गई थी। उसी धून में मैं हर रोज प्रतिहिंसा की माला जपती थी। उसके लिए ताकत और बल इकट्ठा करने की भावना ने ही मुझे अमेरिका जाकर समृद्ध होने की प्रेरणा दी थी। या यह भी पलायन का ही एक रूप था। कौन जाने?"[9]

बाद में स्मिता डॉ० जारविस (जो मनोचिकित्सक है) से शादी करती है। वह अपने अहंकार की पूर्ति के लिए स्मिता से विवाह तो कर लेता है, परन्तु अपनी रुचि के अनुकूल कॉफ़ी न उपलब्ध होने पर मारपीट पर उतर आता है। इसके माध्यम से लेखिका ने इस ओर भी इशारा किया है कि पाश्चात्य समाज में मूल्यहीन संस्कृति किस कदर हावी है। जो लोग बात-बात पर प्यार करते हैं और बात-बात पर तलाक, जिनके यहाँ करीब-करीब हर बच्चे के दो-एक सौतेले या संरक्षक माँ-बाप होते हैं, जिन्हें अपने आजाद समाज और सेक्स के अमर्यादित आनन्द पर नाज है, वे यह भी मानते हैं कि माँ-बाप के सेक्स संबंधों का इतना दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है। दरअसल, इन्हीं प्रभावों की शिनाख्त निरूपण और इलाज पर लाखों डालर खपत वाला यह साइक्याट्रिक उपयोग टिका हुआ है।"

मृदुला गर्ग की प्रमुख चिंता यह है कि स्त्री और पुरुष कब तक एक-दूसरे के विरोध में खड़े होकर जीवन व्यतीत करते रहेंगे। जब सृष्टि का निर्माण ही दोनों के पारस्परिक सहयोग से संभव है, तो फिर परिवार और समाज में परंपराओं, निषेधों और संस्कारों के नाम पर आरोप-प्रत्यारोप का यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा। मनोज और मीना के संबंधों के माध्यम से लेखिका इस जटिलता को उजागर करती हैं। जब मीना ईमानदारी से अपने जीवन में हुए शोषण और पीड़ा को मनोज के सामने व्यक्त करना चाहती है और पूर्ण समर्पण के साथ उसके निकट आती है, तब वही मनोज उसका साथ सहन नहीं कर पाता। यह स्थिति पुरुष मानसिकता की संकीर्णता और संवेदनहीनता को दर्शाती है।

मृदुला गर्ग विवाह संबंध को एक ओर परिभाषित करती हैं, तो दूसरी ओर उससे जुड़े कर्मकांडों पर तीखा व्यंग्य भी करती हैं। उनके अनुसार, अनेक बार विवाह एक पवित्र संबंध न रहकर संघर्ष का मैदान बन जाता है, जहाँ प्रेम और आनंद के स्थान पर केवल औपचारिकता और दायित्त्व रह जाते हैं। ऐसा वैवाहिक जीवन प्रेमहीन, नीरस और मात्र शारीरिक संबंधों तक सीमित होकर रह जाता है, जिसे निभाना स्त्री की नियति मान लिया जाता है।

मनीषा के अनुभवों के माध्यम से समर्पण और बलात्कार के बीच के सूक्ष्म अंतर को भी स्पष्ट किया गया है। बाहरी रूप से आनंदमय प्रतीत होने वाले क्षणों में भी उसकी आत्मा तृप्त नहीं हो पाती। मनु और मनीष का जीवन भी इसी प्रकार की विसंगतियों और विडंबनाओं से भरा हुआ है। विडंबना यह है कि उन्हें अपने पतियों का प्रेम तब प्राप्त होता है, जब वे स्वयं प्रेम करना छोड़ चुकी होती हैं। नर्मदा का चरित्र भारतीय नारी के उस व्यापक श्रमजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो भले ही औपचारिक शिक्षा से वंचित हो, परंतु सांस्कृतिक चेतना से समृद्ध हैं। इन स्त्रियों के जीवन में यौवन के साथ ही संघर्ष और थकान का प्रवेश हो जाता है। फिर भी नर्मदा, असीमा की माँ (दर्जिन बीबी) जैसे पात्रों में परिवार के प्रति समर्पण और जीवन के प्रति आस्था स्पष्ट दिखाई देती है। अभाव और अपमान के बावजूद उनके भीतर जीवन की सार्थकता के बीज विद्यमान रहते हैं।

नर्मदा के जीवन में भी गहरी पीड़ा और संघर्ष रहा है। पति से अलगाव और जीजा की मृत्यु के बाद भी उसके भीतर घृणा और प्रतिशोध की भावना पूरी तरह समाप्त नहीं होती। इसके बावजूद वह अपनी बहन के घर लौटती है, जहाँ उसे नमिता के जीवन के बारे में पता चलता है। नमिता अपने पति की बीमारी की उपेक्षा करते हुए एक स्वच्छंद जीवन जी रही है और उच्चवर्गीय मानसिकता के कारण अपने नौकरों आदि के प्रति घृणा का भाव रखती है। इस प्रकार लेखिका विभिन्न स्त्री-पात्रों के माध्यम से समाज, संबंधों और मानवीय संवेदनाओं की जटिलताओं को गहराई से उजागर करती हैं। नर्मदा के सन्दर्भ में लेखिका लिखती है- "बचपन बड़े लोगों का होता है। हम तो कमाऊ ही पैदा होते हैं। चलो जब तक माता की छाती में मुँह रहे समझ लो बचपन है।"[10] नर्मदा का उदात्त रूप वहाँ खुलकर सामने आता है जहाँ वह नमिता के पति के बारे में स्मिता को जानकारी देते हुए कहती है- "साहब बेचारा क्या दिलासा देता उसकी तो बानी छिनी पड़ी थी। बस वह टक लगाए मुझे ताकता रहता था, अंखियाँ पनिया जावें थी। आँखों से आँसू निकल आते तो मैं धोती के पल्लू से पोंछ डाले थी। कभी मन में जाने क्या हूक-सी उठ आवे थी कि मैं उसे कहानी या लोरी गा सुनाने लगी थी जैसे वह नन्हा बालक हो। अरे क्या मरद, क्या औरत, बेबस, लाचार, परवस हो तो नन्हा बालक ही हुआ न। इस दुखी जीवन में बालक को छाती से लगाने में क्या शर्म और कैसी झिझक।"[11]

मृदुला गर्ग इसके विपरीत पश्चिमी समाज के संदर्भ में, जिसकी ओर भारतीय पुरुषों का आकर्षण प्रायः अधिक रहता है, डॉ० के माध्यम से एक तीखी टिप्पणी प्रस्तुत करती हैं। उनके अनुसार, हम स्वयं को 'पुरानी संस्कृति' का मानने वाले लोग अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं करते, बल्कि उन्हें और अधिक जटिल बना देते हैं। कृतज्ञता प्रकट करते समय अत्यधिक विनम्रता का प्रदर्शन करते हैं और शोक के क्षणों में भी हमारा व्यवहार कई बार बनावटी प्रतीत होता है। हमारी भाषा अत्यंत लच्छेदार होती है, जिसका उपयोग हम अपने चारों ओर एक प्रकार का तिलिस्म रचने के लिए करते हैं, जिसे भेद पाना आसान नहीं होता। इसके विपरीत, अमेरिकी समाज सीमित शब्दों और सीधे भाव-प्रदर्शन में विश्वास करता है।

स्मिता और जारविस के दाम्पत्य संबंध के माध्यम से लेखिका स्त्री की गहन मानसिक पीड़ा को उजागर करती हैं। स्मिता मातृत्व को धारण करती है, किंतु एक दुर्घटना के कारण उसका गर्भपात हो जाता है। इस घटना से उत्पन्न उसकी पीड़ा अत्यंत मार्मिक और झकझोर देने वाली है, जो प्रत्येक स्त्री की संवेदना को स्पर्श करती है। लेखिका यह भी इंगित

करती हैं कि आधुनिक उपभोक्तावादी और सुखभोगी प्रवृत्ति, जो अत्यधिक समृद्धि की देन है, पारिवारिक जीवन और दाम्पत्य संबंधों को भीतर ही भीतर क्षीण करती है। अंततः स्मिता अमेरिकी पद्धति के अनुसार डॉ० जारविस से तलाक ले लेती है। पाश्चात्य जीवन-दृष्टि में संतानोत्पत्ति का निर्णय कई बार व्यक्तिगत संवेदनाओं के बजाय परिस्थितियों और जीवनशैली से नियंत्रित होता है, जिससे स्त्री की सृजन-इच्छा बाधित हो सकती है।

मारियान का जीवन भी इसी विडंबना को दर्शाता है। पहले विवाह में असफल होने के बाद वह विश्वास, समझदारी और सहयोग की अपेक्षा के साथ पुनर्विवाह करती है, किंतु वहाँ भी उसे पुरुष का वही संवेदनहीन रूप देखने को मिलता है। लेखिका एक गम्भीर प्रश्न उठाती हैं—क्या नारी केवल प्रताड़ना, अपमान, शोषण और अन्याय सहने के लिए ही जन्म लेती है? स्मिता, मारियान, असीमा और नर्मदा जैसे पात्र इस पीड़ा को अलग-अलग रूपों में जीते हुए दिखाई देते हैं, मानो वे सभी इसी प्रकार के जीवन के लिए अभिशप्त हों। मारियान कहती है- "मैं यह मानने को तैयार नहीं थी। ऐसा नहीं था कि मैंने कभी किसी मर्द के हाथों चोट नहीं खायी। पर तमाम मर्दों को एक खांचे में डालने के लिए तैयार नहीं थी।" ऐसी ही स्थिति का पता सूजन के शब्दों से चलता है। उसका गुस्सा धैर्य और हथियार हमेशा दूसरे मर्दों के लिए इस्तेमाल होते आया था। अपने मर्द के सामने उसने हथियार उठाने की कोशिश तक नहीं की। बस अपने रोने का एक खास समय तय कर लिया और काम में हर्ज किए बिना आँसुओं के नमक में धरती की ताकत बिखेरने वाला ममत्व ढूंढ लिया। पति पीड़िताओं की शरणस्थली 'रॉ' संस्था है, जहाँ स्मिता की भेंट मारियान से होती है और मैत्री का अंकुर निकलकर वृक्ष बनता है। मारियान कहती है- "यही कि मर्द नाम का प्राणी खुदगर्ज और जालिम होता है।" उपन्यास के नारी पात्रों में स्मिता का विशेष स्थान है, जिसके जीवन के प्रारंभिक बीस वर्ष भारत में बीते हैं, जिससे उसमें भारतीय संस्कार गहराई से विकसित हुए हैं। इसके विपरीत, मारियान अमेरिकी संस्कृति में पली-बढ़ी है, जबकि नर्मदा श्रमजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री है, जो निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्ग के बीच की स्थिति को दर्शाती है।

इन विभिन्न स्त्री-पात्रों के माध्यम से लेखिका वैश्वीकरण के प्रभाव में भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों में आए परिवर्तनों और सांस्कृतिक ह्रास की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। वे संकेत देती हैं कि आंतरिक इच्छाओं की पूर्ति और संबंधों की स्थिरता के लिए विश्वास और स्नेह दोनों ही अनिवार्य हैं। लेखिका यह प्रश्न भी उठाती हैं कि संबंधों में विकल्पों की खोज की आवश्यकता ही क्यों उत्पन्न होनी चाहिए। वस्तुतः पारस्परिक समझ और संवेदना के अभाव में स्त्री और पुरुष एक-दूसरे से वास्तविक रूप से जुड़ नहीं सकते। यह स्पष्ट है कि कठगुलाब में एक ओर 'कठगुलाब' का प्रतीक है, तो दूसरी ओर उसे नष्ट करने वाली 'कठफोड़वा' जैसी विनाशकारी शक्ति भी उपस्थित है। स्मिता के जीवन में यह विनाशकारी तत्त्व उसके जीजा के रूप में सामने आता है, जो उसकी पीड़ा और आंतरिक विखंडन का कारण बनता है। भारतीय समाज में जीजा–साली के संबंधों के इर्द-गिर्द जो मिथक और विकृत धारणाएँ पनपती हैं, वे कई बार अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और त्रासद रूप ले लेती हैं।

उपन्यास में 'गोधड़' एक ऐसे स्थान के रूप में उभरता है, जहाँ स्त्री स्वयं को पूर्ण समर्पण के साथ पुनर्स्थापित करती है और नई शक्ति तथा ऊर्जा प्राप्त करती है। यह वह भूमि है, जहाँ दुःख, कष्ट, पीड़ा और वेदना की चरम सीमा से गुजरकर अर्जित अनुभव, बंजर धरती पर भी 'कठगुलाब' उगाने की क्षमता प्रदान करते हैं। मानो यह कहावत यहाँ साकार होती है कि दर्द जब अपनी सीमा पार कर जाता है, तो वही उपचार का रूप ले लेता है। स्मिता, असीमा, नर्मदा और नीरजा जैसे सभी नारी पात्रों के अनुभवों का निष्कर्ष भी यही है कि जीवन किसी पूर्व निर्धारित ढर्रे पर नहीं चलता, जिसे सार्वभौमिक आदर्श मान लिया जाए। जीवन परिस्थितियों, समय, सोच और व्यक्ति की सामर्थ्य के अनुसार बदलता रहता है। इसी कारण, सभी स्त्रियाँ अंततः 'गोधड़' के मार्ग को अपनाती हैं, क्योंकि पुरुषों से मिली उपेक्षा, आत्मवंचना और अपमान के बाद यही मार्ग उन्हें अधिक सार्थक और उचित प्रतीत होता है।

निष्कर्ष-

इस प्रकार 'कठगुलाब' उपन्यास नारी संवेदना की व्यापक और समग्र अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है, जिसमें स्त्री के अंतर्मन की जटिलताओं, संघर्षों और उसकी सृजनात्मक शक्ति का गहन चित्रण किया गया है। यह कृति केवल वर्तमान स्त्री-जीवन का ही दर्पण नहीं है, बल्कि उसके संभावित भविष्य की ओर भी संकेत करती है। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि यदि नारी की संवेदना, संवेदनहीन बौद्धिक जटिलताओं, कृत्रिमता और प्रतिशोधात्मक प्रवृत्तियों में उलझकर रह जाएगी, तो उसका परिणाम अंततः विखंडन, अकेलेपन और आंतरिक टूटन के रूप में सामने आएगा। इसके विपरीत, यदि यही संवेदना प्रेम, आस्था और सृजन की दिशा में प्रवाहित होती है, तो वह न केवल स्वयं को सशक्त बनाती है, बल्कि समाज को भी एक नई दिशा प्रदान करती है। उपन्यास में स्त्री की पीड़ा को केवल करुणा के स्तर पर नहीं रखा गया, बल्कि उसे एक ऐसी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो संघर्षों से गुजरकर सृजन में रूपांतरित हो सकती है। लेखिका ने नारी अस्तित्व की मौलिकता को अत्यंत सूक्ष्म और गहन संवेदनात्मक धरातल पर उद्घाटित किया है। उनकी दृष्टि में स्त्री केवल पीड़िता नहीं है, बल्कि वह एक सर्जक, सहनशील और जीवनदायिनी शक्ति भी है, जो अपने अनुभवों की तीव्रता से एक नई चेतना का निर्माण करती है। इस प्रकार यह उपन्यास नारी जीवन की जटिलताओं, उसकी आंतरिक दृढ़ता और उसकी सृजनशील संभावनाओं का सशक्त एवं प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करता है।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची:

1. गर्ग मृदुला। (1996)। कठगुलाब, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 104

2. वही

3. वही, पृष्ठ संख्या 105

4. वही, पृष्ठ संख्या 155

5 वही, पृष्ठ संख्या 165

6. वही, पृष्ठ संख्या 17

7. वही, पृष्ठ संख्या 135

8. वही, पृष्ठ संख्या 122

9. वही, पृष्ठ संख्या 153

10. वही, पृष्ठ संख्या 135

11. वही, पृष्ठ संख्या 145